International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वारा स्थापित की गई 'आज़ाद हिंद फौज' का अध्ययन

Ravinder KUMAR
PGT-History
GSSS Rabhra Sonipat Haryana

सार

सुभाष चंद्र बोस भारत की अवसर लड़ाई के मुख्य और सबसे उल्लेखनीय प्रमुख थे। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई के लिए जापान की मदद से आजाद हिंद फौज को आकार दिया। उनके द्वारा दिया गया जय हिंद का आदर्श भारत का सार्वजनिक ट्रेडमार्क बन गया है। उसका ट्रेडमार्क "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें मौका दूंगा" इसके अलावा आसपास के प्रसिद्ध था। भारतीय लोग उन्हें नेताजी के नाम से संबोधित करते हैं।

कुछ पुरातनपंथी स्वीकार करते हैं कि जब नेताजी ने जापान और जर्मनी से मदद लेने का प्रयास किया, तो ब्रिटिश सरकार ने 1941 में अपने गुप्त संचालकों से उन्हें निरस्त करने का अनुरोध किया।

5 जुलाई 1943 को, नेताजी ने सिंगापुर के टाउन हॉल से पहले "इनकंपरेबल कमांडर" के रूप में मिलिट्री में कदम रखा, "दिल्ली में टहलें!" ट्रेडमार्क दिया और जापानी सेना के साथ एक टीम के रूप में, ब्रिटिश और राष्ट्रमंडल सेना ने इम्फाल और कोहिमा सहित बर्मा में एक उग्र मोर्चा लिया।

भूमिका

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

21 अक्टूबर 1943 को, सुभाष बोस ने, आजाद हिंद फौज के प्रमुख प्रशासक के रूप में, स्वायत्त भारत की अनंतिम सरकार का आकार दिया, जिसे जर्मनी, जापान, फिलीपींस, कोरिया, चीन, इटली, मंचुको सहित 11 देशों के विधायकों ने माना था। और आयरलैंड। जापान ने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह को इस क्षणभंगुर सरकार को दे दिया। सुभाष उन द्वीपों में गए और उनका नाम बदल दिया।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, 1943 में, टोक्यो में रासबिहारी बोस ने जापान की सहायता से, आज़ाद हिंद फौज या भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) नामक एक सुसज्जित शक्ति को समन्वित करके भारत को ब्रिटिश कब्जे से मुक्त कराया। कप्तान मोहन सिंह, रासबिहारी बोस और निरंजन सिंह गिल ने इस सेना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज़ाद हिंद फ़ौज की स्थापना की संभावना ने पहले मोहन सिंह के राग अलापा।

इसी बीच विदेशों में रह रहे भारतीयों के लिए इण्डियन इण्डिपेंडेंस लीग की स्थापना की गई, जिसका प्रथम सम्मेलन जून 1942 ई, को बैंकाक में हुआ।

अन्य सभी से पहले, युद्ध में हिरासत में लिए गए भारतीय सेनानियों को जापान ने इस सेना में ले लिया था। बाद में, बर्मा और मलाया में स्थित भारतीय स्वयंसेवकों को अतिरिक्त रूप से सम्मानित किया गया। पहले इस सेना में लगभग 16,300 सैनिक थे। बाद में, जापान ने 60,000 युद्ध बंदियों को आज़ाद हिंद फौज में शामिल होने के लिए छोड़ दिया, हालांकि इसके बाद ही आज़ाद हिंद फौज और मोहन सिंह और निरंजन सिंह गिल की नौकरी के बारे में मोहन सिंह के तहत जापानी सरकार और भारतीय अधिकारियों के बीच एक सवाल उभरा।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आजाद हिंद फौज का दूसरा दौर शुरू होता है जब सुभाष चंद्र बोस सिंगापुर गए थे। सुभाष चंद्र बोस ने 1941 में बर्लिन में इंडियन लीग की स्थापना की, फिर भी जैसे ही जर्मनी ने रूस के खिलाफ उनका उपयोग करने का प्रयास किया, उन्होंने मुसीबत का सामना किया और दक्षिण पूर्व एशिया जाने का विकल्प चुना।

एक वर्ष बाद सुभाष चन्द्र बोस पनडुब्बी द्वारा जर्मनी से जापानी नियंत्रण वाले सिंगापुर पहुँचे और पहुँचते ही जून 1943 में टोकियो रेडियो से घोषणा की कि **अंग्रेजों से यह आशा करना बिल्कुल व्यर्थ है कि वे स्वयं अपना साम्राज्य छोड़ देंगे। हमें भारत के भीतर व बाहर से स्वतंत्रता के लिये स्वयं संघर्ष करना होगा।** इससे प्रफुल्लित होकर रासबिहारी बोस ने 4 जुलाई 1943 को 46 वर्षीय सुभाष को **आजाद हिन्द फौज** का नेतृत्व सौंप दिया।

'आज़ाद हिंद फौज' का अध्ययन

5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हाल के सामने **सुप्रीम कमाण्डर** के रूप में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जी ने सेना को सम्बोधित करते हुए **दिल्ली चलो!** का नारा दिया और जापानी सेना के साथ मिलकर बर्मा सहित **आज़ाद हिन्द फौज** रंगून (यांगून) से होती हुई थलमार्ग से भारत की ओर बढ़ती हुई 18 मार्च सन 1944 ई. को कोहिमा और इम्फ़ाल के भारतीय मैदानी क्षेत्रों में पहुँच गई और ब्रिटिश व कामनवेल्थ सेना से जमकर मोर्चा लिया। बोस ने अपने अनुयायियों को **जय हिन्द** का अमर नारा दिया और 21 अक्टूबर 1943 में सुभाषचन्द्र बोस ने **आजाद हिन्द फौज** के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से सिंगापुर में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार **आज़ाद हिन्द सरकार** की स्थापना की। उनके अनुययी प्रेम से उन्हें नेताजी कहते थे।

अपने इस सरकार के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा सेनाध्यक्ष तीनों का पद नेताजी ने अकेले संभाला। इसके साथ ही अन्य जिम्मेदारियां जैसे वित्त विभाग एस.सी चटर्जी को, प्रचार विभाग एस.ए. अय्यर को तथा महिला संगठन लक्ष्मी स्वामीनाथन को सौंपा गया। उनके इस सरकार को जर्मनी, जापान, फिलीपीन्स, कोरिया, चीन, इटली, मान्चुको और आयरलैंड ने मान्यता दे दी। जापान ने अंडमान व निकोबार द्वीप इस अस्थायी सरकार को दे दिये। नेताजी उन द्वीपों में गये और उनका नया नामकरण किया। अंडमान का नया नाम **शहीद द्वीप** तथा निकोबार का **स्वराज्य द्वीप** रखा गया। 30 दिसम्बर 1943 को इन द्वीपों पर स्वतन्त्र भारत का ध्वज भी फहरा दिया गया। इसके बाद नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने सिंगापुर एवं रंगून में **आज़ाद हिन्द फ़ौज** का मुख्यालय बनाया।

4 फ़रवरी 1944 को आजाद हिन्द फौज ने अंग्रेजों पर दोबारा भयंकर आक्रमण किया और कोहिमा, पलेल आदि कुछ भारतीय प्रदेशों को अंग्रेजों से मुक्त करा लिया। 6 जुलाई 1944 को उन्होंने रंगून रेडियो स्टेशन से महात्मा गांधी के नाम जारी एक प्रसारण में अपनी स्थिति स्पष्ठ की और **आज़ाद हिन्द फौज** द्वारा लड़ी जा रही इस निर्णायक लड़ाई की जीत के लिये उनकी शुभकामनाएँ माँगीं:-**मैं जानता हूँ कि ब्रिटिश सरकार भारत की स्वाधीनता की माँग कभी स्वीकार नहीं करेगी। मैं इस बात का कायल हो चुका हूँ कि यदि हमें आज़ादी चाहिये तो हमें खून के दरिया से गुजरने को तैयार रहना चाहिये। अगर मुझे उम्मीद होती कि आज़ादी पाने का एक और सुनहरा मौका अपनी जिन्दगी में हमें मिलेगा तो मैं शायद घर छोड़ता ही नहीं। मैंने जो कुछ किया है अपने देश के लिये**

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

किया है। विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाने और भारत की स्वाधीनता के लक्ष्य के निकट पहुँचने के लिये किया है।

भारत की स्वाधीनता की आखिरी लड़ाई शुरू हो चुकी है। आज़ाद हिन्द फौज **के सैनिक भारत की भूमि पर सफलतापूर्वक लड़ रहे हैं। हे राष्ट्रपिता! भारत की स्वाधीनता के इस पावन युद्ध में हम आपका आशीर्वाद और शुभ कामनायें चाहते हैं।**

सुभाषचन्द्र बोस द्वारा ही गांधी जी के लिए प्रथम बार **राष्ट्रपिता** शब्द का प्रयोग किया गया था। इसके अतिरिक्त सुभाष चन्द्र बोस ने फ़ौज के कई बिग्रेड बना कर उन्हें नाम दिये:- **महात्मा गाँधी ब्रिगेड**, **अबुल कलाम आज़ाद ब्रिगेड**, **जवाहरलाल नेहरू ब्रिगेड** तथा **सुभाषचन्द्र बोस ब्रिगेड**। सुभाषचन्द्र बोस ब्रिगेड के सेनापति शाहनवाज ख़ाँ थे।21 मार्च 1944 को **दिल्ली चलो** के नारे के साथ **आज़ाद हिंद फौज** का हिन्दुस्तान की धरती पर आगमन हुआ।

2 सितम्बर 1944 को शहीदी दिवस मनाते हुये सुभाषचन्द्र बोस ने अपने सैनिकों से मार्मिक शब्दों में कहा -**हमारी मातृभूमि स्वतन्त्रता की खोज में है। तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा। यह स्वतन्त्रता की देवी की माँग है।**

फ़रवरी से लेकर जून 1944 ई. के मध्य तक **आज़ाद हिन्द फ़ौज** की तीन ब्रिगेडों ने जापानियों के साथ मिलकर भारत की पूर्वी सीमा एवं बर्मा से युद्ध लड़ा किन्तु दुर्भाग्यवश द्वितीय विश्व युद्ध का पासा पलट गया। जर्मनी ने हार मान ली और जापान को भी घुटने टेकने पड़े। ऐसे में नेताजी को टोकियो की ओर पलायन करना पड़ा और कहते हैं कि हवाई दुर्घटना में उनका निधन हो गया किन्तु इस बात की पुष्टि अभी तक नहीं हो सकी है। **आज़ाद हिन्द फौज** के सैनिक एवं अधिकारियों को अंग्रेज़ों ने 1945 ई. में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गिरफ़्तार कर लिया और उनका सैनिक अभियान असफल हो गया, किन्तु इस असफलता में भी उनकी जीत छिपी थी।

आज़ाद हिन्द फ़ौज के गिरफ़्तार सैनिकों एवं अधिकारियों पर अंग्रेज़ सरकार ने दिल्ली के लाल क़िला में नवम्बर, 1945 ई. को झूठा मुकदमा चलाया और फौज के मुख्य सेनानी कर्नल सहगल, कर्नल ढिल्लों एवं मेजर शाहवाज ख़ाँ पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया। इनके पक्ष में सर तेजबहादुर सप्रू, जवाहरलाल नेहरू, भूला भाई देसाई और के.एन. काटजू ने दलीलें दी लेकिन फिर भी इन तीनों की फाँसी की सज़ा सुनाई गयी। इस निर्णय के ख़िलाफ़ पूरे देश में कड़ी प्रतिक्रिया हुई, आम जनमानस भड़क उठे और और अपने दिल में जल रहे मशालों को हाथों में थाम कर उन्होंने इसका विरोध किया, नारे लगाये गये- **लाल क़िले को तोड़ दो, आज़ाद हिन्द फ़ौज को छोड़ दो।** विवश होकर तत्कालीन वायसराय लॉर्ड वेवेल ने अपने विशेषाधिकार का प्रयोग कर इनकी मृत्युदण्ड की सज़ा को माफ करा दिया।

निष्कर्ष

निस्सन्देह सुभाष उग्र राष्ट्रवादी थे। उनके मन में फासीवाद के अधिनायकों के सबल तरीकों के प्रति भावनात्मक झुकाव भी था और वे भारत को शीघ्रातिशीघ्र स्वतन्त्रता दिलाने हेतु हिंसात्मक उपायों में आस्था भी रखते थे। इसीलिये उन्होंने **आजाद हिन्द फौज** का गठन किया था।"

यद्यपि **आज़ाद हिन्द फौज** के सेनानियों की संख्या के बारे में थोड़े बहुत मतभेद रहे हैं परन्तु ज्यादातर इतिहासकारों का मानना है कि इस सेना में लगभग चालीस हजार

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सेनानी थे। इस संख्या का अनुमोदन ब्रिटिश गुप्तचर रहे कर्नल जीडी एण्डरसन ने भी किया है।जब जापानियों ने सिंगापुर पर कब्जा किया था तो लगभग 45 हजार भारतीय सेनानियों को पकड़ा गया था।

सन्दर्भ

- **https://www.prabhasakshi.com/**
- **https://www.drishtiias.com/**
- **http://shodhganga.inflibnet.ac.in/**
- **https://www.hindisamay.com/**
- www.historydiscussion.net
- https://hi.unionpedia.org/
- targetwithhindisahitya.com/